

Bhajan

13

राम नाम लौ लागी

राम नाम लौ लागी ।
अब मोहे राम नाम लौ लागी ॥

उदय हुआ शुभ भाग्य का भानु,
भक्ति भवानी जागी ॥ १ ॥

मिट गये संशय भव भय भारे,
भ्रान्ति भूल भी भागी ॥ २ ॥

पाप हरण श्री राम चरण का,
मन बन गया अनुरागी ॥ ३ ॥

करूणा करो मोरे राम

करूणा करो मोरे राम,
निसदिन जपत हूँ तुमरो नाम ॥

अब मैं आयो शरण तिहारी,
नाम लेत भव पार उतारो ॥ १ ॥
करूणा करो मोरे राम . . .

तुम सबके प्रभु पालन हारे,
करो नईया अब पार मोरी ॥ २ ॥
करूणा करो मोरे राम . . .

राम अब स्नेह सुधा बरसा दे

राम अब स्नेह सुधा बरसा दे ॥

भक्ति बदलिया उमड़ झूमती,
झड़ियां सरस लगा दे ॥१॥

घट में घटा घन नाम गर्ज से,
मन मयूर नचा दे ॥२॥

परम धाम की कृपा परा का,
पानी पूर बहा दे ॥३॥

पाप ताप से तप्त हृदय-मन,
शीतल शांत बना दे ॥४॥

अरे मन समझ-समझ पग धरिए

राम नाम मुद मंगलकारी,
विघ्न हरे सब पातक हारी,
तन धन तुमरो, आत्मा भी तुमरी,
मोहे नहीं सब तोहे, सब किल विष उतरै ज्ञान कर,
फिर बोड़ जन्म न होए - - ३

अरे मन समझ-समझ पग धरिए,
अरे मन इस जग में नहीं अपना कोई,
परछाईं सो डरिए ॥
अरे मन . . .

दौलत दुनिया कुटुम्ब कबीला,
इनसे नेह कब हूँ न करिए,
राम नाम सुख धाम जगत पति,
सुमिरन सो जग तरिए ॥ १ ॥
अरे मन . . .

राम नाम अनमोल रत्न है,
सुरति लीन राम में करिए,
राम नाम जप ओ हंग सो हंग,
भव सागर में तरिए ॥ २ ॥
अरे मन . . .

प्रीति प्रभु से जोड़ रे मन

प्रीति प्रभु से जोड़ रे मन ॥

प्रभु जैसा कोई मीत नहीं है,
अनन्य प्रीति सी प्रीत नहीं है,
उस से ना मुख मोड़ रे मन ॥ १ ॥

परम पुरुष के पुण्य नाम में,
पावन रूप परम धाम में,
भ्रम संशय सब छोड़ रे मन ॥ २ ॥

निन्दा कुसंगति कुसंग कुमति से,
कुटिल कर्म कुभाव कुगति से,
नेह नाता अब तोड़ रे मन ॥ ३ ॥

मेरे राम रघुनाथ तेरी जय होवे

मेरे राम रघुनाथ तेरी जय होवे ।
जय होवे तेरी जय होवे ॥

नित्य प्रति गुण मैं तेरे गाऊँ ।
तेरे चरणों पर सीस नवाऊँ ।
गद् गद् प्रेम से सदा पुकारूँ,
जय होवे तेरी जय होवे ॥ १ ॥

प्रेम मग्न मन होवे मेरा ।
यह जीवन हो जावे तेरा ।
सदा प्रेम से यही उचारूँ,
जय होवे तेरी जय होवे ॥ २ ॥

जपो जी नित्य राम राम श्रीराम

जपो जी नित्य राम राम श्रीराम ॥

अशरण शरण अघ हरण चरण में,
मिले शांति विश्राम ॥ १ ॥

चिंतन ध्यान जाप का करना,
गाना हरि गुण ग्राम ।
सुरति शब्द संयोग रूप यह,
सहज योग है नाम ॥ २ ॥

राम राम मय नाद मधुरतम,
जब हो बिना विराम ।
तब समझो कर निश्चय पूर्ण,
सुधर गये सब काम ॥ ३ ॥

राम शब्द जब चले निरंतर,
भीतर आठों याम ।
सत्य समझिए फले मनोरथ,
मिला परम पद धाम ॥ ४ ॥

राम रस बरस्यो री

राम रस बरस्यो री, आज म्हारे आंगन में ।
जाग गये सब सोये सपने, सभी पराये हो गये अपने,
लगे प्रेम की माला जपने, लगे राम की माला जपने,
कि अंग अंग हरस्यो री, आज म्हारे आंगन में ॥

युग युग के थे नैन तिसाये, आज पियत सखी बिना पिलाये,
कहां बिठाऊँ मेरे बाबा आये, कहां बिठाऊँ मेरे सतगुरु आये,
ठौर कोई करस्यो री, आज म्हारे आंगन में ॥

ठुमक ठुमक मोरी पायल बाजे, अगल बगल मेरा राम बिराजे,
प्रेमी को तो प्रीत ही साजै, प्रेमी को तो प्रीत ही साजै,
बहुत दिन तरस्यो री, आज म्हारे आंगन में ॥

धरती नाची अम्बर नाचा, आज देवता खुलकर नाचा,
मैं नाची मेरा प्रियतम नाचा, मैं नाची मेरा सतगुरु नाचा,
प्रेम रस बरस्यो री, आज म्हारे आंगन में ॥

रुक गई रात, रुका है चन्दा, साधो! मंगल मौज अनन्दा,
तू निर्दोष अरे क्यूं मन्दा, तू निर्दोष अरे क्यूं मन्दा,
घड़ी दस बरस्यो री, आज म्हारे आंगन में ॥